April 10

भ्वादिगण लोट् लकार - 3

'मेर्निः'

लोटो मेर्निः स्यात्।

लोट् के 'मि' के स्थान पर 'नि' आदेश होता है। अनेकाल् होने के कारण यह सम्पूर्ण 'मि' के स्थान पर होगा। उदाहरण के लिए लोट् के उत्तम एकवचन 'भू + मिप्' में 'मि' के स्थान पर 'नि' होकर 'भू + नि' रूप बनता है, तब शबादि कार्य होने पर 'भव नि' रूप बनता है।

'आडुत्तमस्य पिच्च।'

लोडुत्तमस्याट् स्यात् पिच्च। भवानि।

हिन्योरुत्वं न, इत्वोच्चारणसामर्थ्यात्।

'ते प्राग् धातोः।'

ते गत्युपसर्गसंज्ञका धातोः प्रागेव प्रयोक्तव्याः।

लोट् के उत्तम को 'आट्' आगम होता है और यह 'आट्' 'पित्' होता है। 'आट्' के टकार की इत्संज्ञा होकर उसका लोप हो जाता है, आकार ही शेष रह जाता है। टित् होने के कारण यह प्रत्यय का आदि अवयव होता है।

उपसर्ग और गति धातु के पूर्व आते हैं। उदाहरणार्थ 'प्रभवाति' और 'अनुभवाति' आदि में धातु 'भवाति' से पूर्व 'प्र' और 'अनु' उपसर्गों का प्रयोग हुआ।

'आनि लोट्।'

उपसर्गस्थान्निमित्तात् परस्य लोडादेशस्य आनीत्यस्य नस्य णः स्यात्। प्रभवाणि

वा० दुरः षत्वणत्वयोरुपसर्गत्वप्रतिषेधो वक्तव्यः।

दुःस्थितिः। दुर्भवानि।

वा० अन्तः शब्दस्याङ्किविधि - णत्वेषूपसर्गत्वं वाच्यम् । अन्तर्भवाणि ।

उपसर्गस्थनिमित्त रकार - षकार से परे लोट् सम्बन्धी 'आनि' के नकार के स्थान पर णकार आदेश होता है। उदाहरण के लिए प्रभवानि में णत्व का निमित्त रकार 'प्र' उपसर्ग में विद्यमान है। अतः उससे परे लोट सम्बन्धी 'आनि' के नकार को णत्व होकर 'प्रभवाणि' रूप बनता है।

अन्तरित - इसका भावार्थ है - 'अन्तर' (शब्दस्य) शब्द के स्थान पर अङ्, किविधि और णत्वविषय में उपसर्गत्व (वाच्यम्) कहना चाहिए।

नित्यं ङितः

सकारान्तस्य ङिदुत्तमस्य नित्यं लोपः । 'अलोऽन्त्यस्य' इति सलोपः - भवाव, भवाम।

सूत्र का भावार्थ होगा - ङित् लकारों के सकारान्त उत्तम का नित्य लोप होता है। 'अलोऽन्त्यस्य' परिभाषा से यह लोप अल् सकार का ही होता है।